शब्द विचार

शब्द

जिस तरह सब्जी पकाने के लिए घी/तेल, नमक, मिर्च, धनिया, हल्दी, टमाटर, पानी व खाद्य (खाने का) पदार्थ जैसे - आलू व कोई भी सब्जी की आवश्यकता होती है।

उसी प्रकार विचार-विनिमय के लिए भाषा की आवश्यकता होती है, उस भाषा का निर्माण शब्दों से होता है। यदि शब्द न हो तो भाषा का कोई अस्तित्व नहीं होता है।

बोलते समय हमारे मुँह से ध्वनियाँ निकलती है। वह प्रत्येक ध्वनि एक वर्ण को इंगित करती है। इन सब ध्वनियों से मिलकर शब्द बनते हैं और इन्हीं वर्णों का समूह शब्द कहलाता है। शब्द में प्रत्येक वर्ण का एक निश्चित स्थान होता है।

यदि निश्चित स्थान पर वर्णों को न रखा जाए तो, उन्हें शब्दों का नाम नहीं दिया जा सकता। उसके लिए इसे उचित स्थान पर रखा जाना बहुत आवश्यक है; जैसे - नवप शब्द लिखा जाए तो इससे किसी सही शब्द का निर्माण नहीं होगा।

परन्तु अब इसमे फेरबदल कर दिया जाए तो यह पवन शब्द बनाता है। इसी तरह से अन्य सभी शब्दों का निर्माण होता है। इसलिए हम कह सकते है, एक या अधिक वर्णों से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक ध्वनि, शब्द कहलाता है।

अन्य परिभाषा :- वर्णों का सार्थक समूह ही शब्द कहलाता है।

उदाहरण -

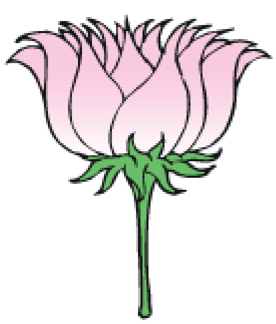	क् + अ + म् + अ + ल् + अ = कमल

कमल - फूल का नाम

शब्द और पद

वर्णों के द्वारा शब्दों का निर्माण होता है। हर शब्द का अपना एक अर्थ होता है। जब हम इन सभी शब्दों को आपस में जोड़कर लिखते हैं तो इसे वाक्य कहा जाता है। इसमें हम व्याकरण सम्बन्धी सभी नियमों का ध्यान रखते हैं।

अपने मनोभावों व विचारों को दूसरों को व्यक्त करने के लिए शब्दों को वाक्यों में एक सही जगह पर रखते हैं, जिससे हम सही तरह से अपने मत को व्यक्त कर सकें। यदि हम इन शब्दों को वाक्यों में सही स्थान पर नहीं रख पाते तो पूरा वाक्य एक गलत अर्थ को दर्शाएगा, जो स्थिति को गंभीर या हास्यासपद बना सकता है; जैसे -

(1) इस नहा से साबुन लो।

इस साबुन से नहा लो।

(2) राम स्कूल देने परीक्षा गया है।

राम परीक्षा देने स्कूल गया है।

यहाँ शब्दों का स्थान बदल जाने पर कोई सार्थक अर्थ नहीं निकल पाया, जिससे कोई लाभ नहीं होता और स्थिति गंभीर हो जाती है या हास्यापद बन जाती है। पर जब हम व्याकरण के नियमों का प्रयोग कर वाक्य निर्माण करते हैं, तो वह पद कहलाता है।

शब्दों का वर्गीकरण - शब्दों की उत्पत्ति

हिंदी शब्द भंडार विश्व की अन्य भाषाओं की तुलना में बहुत समृद्ध व बड़ा है। इसमें हिंदी के साथ-साथ देशी-विदेशी भाषाएँ भी शामिल हैं। उसमें अंग्रेज़ी, फारसी, उर्दू, संस्कृत, तुर्की आदि अन्य भाषाओं के शब्द भी सम्मिलित हो गए हैं।

वे इस प्रकार से हिंदी भाषा में घुलमिल गए हैं कि उनके बिना हमारी भाषा अधूरी जान पड़ती है। इन शब्दों के उत्पत्ति स्थल कौन से हैं, इनके क्या अर्थ हैं? इन सब प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए इन्हें वर्गों में विभाजित किया गया है। इनके वर्गीकरण के आधार निम्नलिखित हैं -

(क) शब्दों की उत्पत्ति

(ख) रचना के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

(ग) प्रयोग के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

(घ) विकार के आधार पर शब्द भेद

(ङ) अर्थ के आधार पर शब्द भेद

शब्दों की उत्पत्ति -

हिंदी शब्द भंडार में अनेकों बाहरी भाषाओं के शब्दों का समावेश है। ये शब्द कैसे आए? इसको जानने के लिए हमें इनकी उत्पत्ति को जानना आवश्यक है। इसकी उत्पत्ति को जानने के लिए चार स्रोत माने गए हैं, जो इस प्रकार हैं -

(क) तत्सम शब्द

(ख) तद्भव शब्द

(ग) देशज शब्द

(घ) विदेशी शब्द

(क) तत्सम शब्द :- तत्सम का अर्थ है तत् (उस) + सम (समान) उस (संस्कृत) के समान। तत्सम शब्द वे शब्द कहलाते हैं जो संस्कृत भाषा से लिए गए हैं व बिना किसी बदलाव के हिंदी भाषा में प्रयुक्त किए जा रहे हैं; जैसे - अग्नि, पितृ, मातृ, वायु, रात्रि इत्यादि।

(ख) तद्भव शब्द :- तद्भव का अर्थ है 'तत् (उससे) + भव (पैदा हुए) अर्थात् उस संस्कृत से पैदा हुए शब्द। वे शब्द जो संस्कृत भाषा के शब्द से विकसित (पैदा हुए) हुए हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं।

उदाहरण -

कार्य	**काज**
तृण	तिनका
निंद्रा	नींद
अंधकार	अंधेरा
अर्ध	आधा
क्षीर	खीर
गणना	गिनती
नृत्य	नाच
नव	नया
पक्षी	पंछी
बाहु	बाँह
सर्प	साँप
सौभाग्य	सुहाग
आम्र	आम

घोटक	घोड़ा
भ्रमर	भौंरा
मित्र	मीत
मिष्ट	मीठा
घृत	घी
चंद्र	चाँद
चंद्रिका	चाँदनी
छत्र	छाता

(ग) देशज :- देशज का अर्थ है - देश + ज अर्थात् देश में जन्म लेने वाला। जो शब्द क्षेत्रीय प्रभाव के कारण परिस्थिति व आवश्यकतानुसार बनकर प्रचलित हो गए हैं, वे देशज कहलाते हैं; जैसे - खड़ाऊ, ज्योंनार, खलिहान, कलेवा इत्यादि।

(घ) विदेशी या विदेशज :- भारत के इतिहास में विदेशी देशों का बड़ा साथ रहा है। कभी व्यापार की दृष्टि से तो कभी शासन की दृष्टि से हम सदा विदेशियों के संपर्क में बने रहे, उनकी भाषा के बहुत से शब्द स्वत: ही हिंदी भाषा में सम्मिलित (मिल) हो गए व आज वे प्रयुक्त होने लगे हैं। ऐसे शब्द विदेशी या विदेशज शब्द कहलाए। हमारी भाषा में अंग्रेज़ी, उर्दू, फ्रांसीसी, फ़ारसी, अरबी, चीनी आदि भाषाओं के अनेक शब्द मिल गए हैं; जैसे - पैंट, प्रोफेसर, चाकू, कागज़, किताब, तौलिया, गमला, आदमी, काजू, चापलूस, नमूना, कत्ल, कलम, गरीब आदि।

यदि हम शुद्ध हिंदी का प्रयोग कर किसी वाक्य का निर्माण करते हैं तो इस तरह लगेगा।

"मैं लज्जा के मारे जल-जल गई,"

यदि हम इसी वाक्य को दूसरे शब्दों में लिखे तो

"मैं शर्म के मारे पानी-पानी हो गई।"

पहला वाक्य बोलने में थोड़ा-सा मुश्किल व उसका अर्थ ज़रा अटपटा लग रहा है। यहाँ जल-जल पानी से लिया गया है। परन्तु यहाँ इसका भाव जलने से लग रहा है, इसलिए पानी शब्द द्वारा इसके भाव को सही तरह से समझा जा सकता है। इसी कारण हमारी भाषा में दूसरे शब्दों को स्थान मिलने लगा इससे जहाँ एक तरफ़ भाषा में सौम्यता आई वहीं वह सरल बन गई, जिससे उसका प्रभाव और सुंदर बन गया।

रचना के आधार पर

वर्णों से मिलकर ही शब्दों का निर्माण होता है। वर्णों के मेल के आधार पर शब्दों के निम्नलिखित तीन भेद माने गए हैं -

• **रुढ़** :- कुछ शब्द होते हैं जिनका खंड करने पर कोई अर्थ नहीं निकला हो या जो अन्य शब्दों के योग से नहीं बनते परन्तु फिर भी किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं, वे रुढ़ कहलाते हैं; जैसे -

रक्त = र + क्त

वक्त = व + क्त

दिन = दि + न

इनमें र + क्त, व + क्त, दि + न के टुकड़े करने पर कुछ अर्थ नहीं निकलता है, अत: ये शब्द निरर्थक हैं।

परिभाषा -

ऐसे शब्द जो किसी विशेष अर्थ में प्रयुक्त होते हैं परंतु उनके टुकड़ों का कोई अर्थ नहीं निकलता; उन्हें रुढ़ शब्द कहा जाता है।

• **यौगिक**:- जो शब्द कई सार्थक शब्दों के मिलने (योग) से बने हो, वे यौगिक कहलाते हैं। जैसे -

(1) देवालय = देव + आलय = देवता का घर

(2) पुस्तकालय = पुस्तक + आलय = पुस्तक का घर

ये दोनों शब्द दो सार्थक शब्दों के मेल से बने हैं और इन दोनों शब्दों के अपने विशेष अर्थ भी हैं।

• **योगरुढ़ शब्द**:- (योगरुढ़ शब्द का अर्थ = योग + रुढ़ अर्थात् जो शब्द यौगिक शब्द व रुढ़ शब्दों के समावेश (मिलने) से बना हो, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। इसमें यौगिक व रुढ़ दोनों शब्दों की विशेषताएँ होती है, अर्थात् यौगिक शब्दों की भाँति उनके सार्थक खंड किए जा सकते हैं तथा रुढ़ शब्दों के समान इनका एक विशेष प्रचलित अर्थ होता है; जैसे -

(1) गंगाधर = गंगा + धर = गंगा को धारण करने वाले अर्थात् शिव

(2) नीलकंठ = नील + कंठ = नीले कंठ वाले अर्थात् शिव

उपर्युक्त शब्द गंगाधर सिर्फ शिव के लिए प्रयुक्त होता है। उसी तरह नीलकंठ भी शिव के लिए प्रयुक्त होता है।

प्रयोग के आधार पर

जिस तरह से एक भवन निर्माण के लिए बहुत सारी सामग्री व लोगों की सहायता पड़ती है; जैसे - लोहा, ईंट, गारा, रेती, सीमेंट, इंजीनियर, मज़दूर इत्यादि। उसी प्रकार एक वाक्य का निर्माण अनेकों शब्दों के प्रयोग से होता है। इस वाक्य में प्रयोग लाए गए हर शब्द का अपना अलग-अलग महत्व

होता है व अपना अलग कार्य होता है। इसी प्रयोग के आधार पर शब्दों के आठ निम्नलिखित भेद माने गए हैं -

(1) संज्ञा

(2) सर्वनाम

(3) विशेषण

(4) क्रिया

(5) क्रिया-विशेषण

(6) संबंधबोधक

(7) समुच्चयबोधक

(8) विस्मयादिबोधक

विकार के आधार पर

हिंदी भाषा में विकार के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं -

1. विकारी शब्द :- विकारी शब्द वे शब्द होते हैं, जिनका रुप परिवर्तित होता रहता है। ये परिवर्तन तीन कारणों से होता है - लिंग, वचन और कारक।

2. अविकारी शब्द :- अविकारी शब्दों में कोई परिवर्तन नहीं होता। उनका रुप हमेशा एक जैसा रहता है; जैसे -

1. राधा बहुत सुंदर चित्र बनाती है।

2. रोहन बहुत सुंदर चित्र बनाता है।

3. दोनों बहुत सुंदर चित्र बनाते हैं।

यहाँ 'बहुत सुंदर' शब्द क्रिया विशेषण है जिनमें लिंग के बदलने के बाद भी कोई परिवर्तन नहीं आया है। अत: ये अविकारी शब्द हैं।

अर्थ के आधार पर

अर्थ की दृष्टि से शब्द के दो भेद होते हैं -

(1) सार्थक :- जिन शब्दों का कुछ न कुछ अर्थ हो, वे शब्द सार्थक शब्द कहलाते हैं; जैसे - रोटी, पानी आदि।

(2) निरर्थक :- जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता है, वे शब्द निरर्थक शब्द कहलाते हैं। उदाहरण के लिए यदि आप से कोई कार्यालय में मिलने व अपने काम के विषय में मिलने आता है। और आपसे पूछता है। आपका हाल-चाल कैसा है, मेरा काम-वाम हुआ कि नहीं?

तो उस व्यक्ति के द्वारा पूछे गए शब्दों में हाल- चाल व काम-वाम का प्रयोग हुआ है। यहाँ हाल (तबीयत आदि से है) का अर्थ स्पष्ट है तथा काम (कार्य) का अर्थ स्पष्ट है परन्तु चाल व वाम का कोई अर्थ नहीं है, ऐसे शब्द निरर्थक शब्द होते हैं।

सार्थक शब्दों का वर्गीकरण-

एकार्थी शब्द- जिन शब्दों के अर्थ बदलते नहीं हैं, एकार्थी शब्द कहलाते हैं।

उदाहरण -

महात्मा गाँधी इसका कोई दूसरा अर्थ नहीं है।

गंगा यह नदी का नाम है पर इसका कोई दूसरा अर्थ नहीं है।

अन्य उदाहरण -

(1) इंतजार - प्रतीक्षा

(2) निधन - मृत्यु

(3) स्वयं - खुद

(4) वध - हत्या

(5) उक्ति - कथन

(6) सुरलोक - स्वर्ग

(7) तृतीय - तीसरा

(8) मयंक - चंद्रमा

(9) क्रय - खरीदना

(10) युवक - युवा

<u>अनेकार्थी शब्द</u>

(1) अलि - भौंरा, कोयल

अन्य शब्द इस प्रकार हैं -

1	अर्थ -	धन, के लिए, प्रयोजन, कारण
2	अमृत -	अन्न, दूध, पारा, जल, स्वर्ण
3	अग्र -	आगे का, पहले, श्रेष्ठ, सिरा
4	अवकाश -	छुट्टी
5	अवधि -	निर्धारित समय, सीमा
6	धन -	बादल, घटा, हथौड़ा
7	गौ -	गाय, इन्द्रिय, पृथ्वी
8	प्राण -	वायु, जीवन, श्वास, बल, शक्ति
9	रस -	खाने का स्वाद, तत्व/सार, आनंद, प्रेम
10	सूत -	धागा, सारथी

<u>पर्यायवाची शब्द</u>

जो शब्द अर्थ की दृष्टि से समान अर्थ वाले होते हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

परन्तु यह याद रखना आवश्यक है कि अर्थ में समानता होने के कारण भी यह पर्यायवाची शब्द प्रयोग में एक दूसरे का स्थान नहीं ले सकते।

1.	तारा -	नखत, तारिका, नक्षत्र, तारक
2.	इंद्र -	सुरेन्द्र, देवेश, देवेंद्र, सुरपति
3.	उन्नति -	उत्थान, उत्कर्ष, विकास, प्रगति
4.	किनारा -	तट, तीर, कगार, कूल

5.	घर -	निकेतन, आलय, गृह, भवन
6.	चाँदनी -	चंद्रिका, कौमुदी, अमृतरंगिणी, ज्योत्सना
7.	जंगल -	वन, कानन, अरण्य, कांतार
8.	पति -	स्वामी, भर्ता, कांत, नाथ
9.	पवन -	हवा, बयार, वायु, समीर
10.	उपवन -	उद्यान, बाग, वाटिका, बगिया
11.	अतिथि -	अभ्यागत, मेहमान, आगंतुक, पाहुना
12.	अहंकार -	दंभ, घमंड, अभिमान, दर्प
13.	असुर -	दानव, राक्षस, निशाचर, दैत्य
14.	पर्वत -	पहाड़, शैल, गिरि, नग
15.	इच्छा -	साध, अभिलाषा, कामना, चाह
16.	रात -	रजनी, यामिनी, तमसा, विभावरी
17.	समुद्र -	सागर, समन्दर, जलधि, नीरधि
18.	मित्र -	सखा, दोस्त, मीत, सहचर
19.	हाथ -	कर, हस्त, पाणि
20.	भौंरा -	मधुप, भँवरा, भ्रमर, मधुकर

<u>विलोम शब्द</u>

1	अमृत	विष
2	उचित	अनुचित
3	नवीन	प्राचीन
4	उधार	नकद
5	भला	बुरा
6	उत्थान	पतन

7	एक	अनेक
8	अंधकार	प्रकाश
9	उदय	अस्त
10	निकट	दूर
11	ऊँचा	नीचा
12	जीवन	मरण
13	भद्र	अभद्र
14	अल्प	अधिक
15	दोषी	निर्दोष
16	गमन	आगमन
17	अर्थ	अनर्थ
18	गुप्त	प्रकट
19	चर	अचर
20	आय	व्यय

भिन्नार्थक शब्द-

कुछ शब्द उच्चारण (बोलने) की दृष्टि से समान प्रतीत होते हैं, परन्तु अर्थ की दृष्टि से उनमें भिन्नता होती है, उन्हें भिन्नार्थक शब्द कहा जाता है; जैसे -

शंभू के पिता की मृत्यु पर हम शोक प्रकट करने गए।

हमें चाऊमीन खाने का बहुत शौक है।

यहाँ पर शोक व शौक शब्दों का प्रयोग हुआ है जहाँ एक शोक का अर्थ - दुख व दूसरे शौक का अर्थ - रुचि से है।

1 अनल - आग/अग्नि = अनल धधकती हुई बढ़ रही है।

अनिल - वायु = बारिश के बाद ठंडी अनिल चलती है।

2 असमान - जो बराबर न हो = असमान तरीके से अनाज का वितरण हुआ।

आसमान - आकाश = आसमान नीला है।

3 कुल - वंश, सब मिलाकर = राम उच्च कुल के थे।

कूल - किनारा = यमुना के कूल पर कृष्ण बाँसुरी बजाते थे।

4 चीर - वस्त्र = दुर्योधन ने द्रोपदी का चीरहरण कराया।

चिर - पुराना = पुराना किला चिर काल से यथा संभव खड़ा है।

5 छात्र - विद्यार्थी = मेरे छात्र बहुत बुद्धिमान हैं।

छत्र - छाता = माँ भवानी को अकबर ने छत्र चढ़ाया था।

6 ताप - गरमी = आग ताप लो ठंड कम लगेगी।

तप - तपस्या = शंकर को पाने के लिए पार्वती ने तपस्या की।

7 थाल - थाली = इस थाल में सारी मिठाई सजा दो।

थल - भूमि = थल सेना ने बहुत पदक अर्जित किए हैं।

8 नीयत - स्वभाव = इसकी नीयत ठीक नहीं लगती।

नियत - निश्चित = जो जिसकी नियत है वो होगी।

9 प्रमाण – सबूत = हमारे पास दोषी के विरुद्ध सारे प्रमाण हैं।

प्रणाम - नमस्कार = हमें बड़ों को सदैव प्रणाम करना चाहिए।

10 क्षति - नुकसान = भूकंप ने जान-माल की बहुत क्षति पहुँचाई।

क्षिति - पृथ्वी = पृथ्वी का दूसरा अर्थ क्षिति है।

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

1	जो अनुकरण के योग्य हो	अनुकरणीय

2	जिसे जाना न जा सके	अज्ञेय
3	जिसकी मृत्यु न हो	अमर
4	कोई काम-काज न करने वाला	अकर्मण्य
5	जीवनभर रहने वाला	आजीवन
6	जो बिना वेतन के कार्य करना वाला	अवैतनिक
7	जिसके हृदय में ममता न हो	निर्मम
8	जो इस लोक में मिलना संभव न हो	अलौकिक
9	जो थोड़ा ही जानता हो	अल्पज्ञ
10	गणित को जानन वाला	गणितज्ञ
11	जिसका कोई आधार न हो	निराधार
12	परशुधारण करने वाला	परशुधर
13	जिसके प्रति संदेह न हो	अंसदिग्ध
14	जिसे सहन न किया जा सके	असह्य
15	हाथ की लिखी पुस्तक	पांडुलिपि
16	जो आत्मा से सम्बंधित हो	आध्यात्मिक
17	जो टुकड़े-2 हो गया हो	खंडित
18	जो पहले ना पढ़ा	अपठित
19	शरीर को पुष्ट बनाने वाला	पौष्टिक
20	जहाँ जाना कठिन हो	दुर्गम

शुद्ध वर्तनी

कई बार हम जो शब्द बोलते हैं, उनको गलत प्रकार से लिख दिया जाता है जिसके कारण पढ़ने वाले को अटपटा-सा प्रतीत होता है, यह वर्तनीगत अशुद्धि होती है।

जैसे - राजसमा का सीधा प्रसारण प्रात 9 बजे।

यहाँ सभा को गलती से समा लिख दिया गया है इसे अशुद्ध वर्तनी कहा जाता है। जबकि इसका शुद्ध वर्तनी राजसभा है।

	अशुद्ध	**शुद्ध**
1	कूतूहल	कुतूहल
2	चिड़िया	चिड़िया
3	इंसान	इनसान
4	दक्किन	दक्खिन
5	वाण	बाण
6	ब्रत	व्रत
7	जमराज	यमराज
8	जोग्य	योग्य
9	कल्यान	कल्याण
10	त्यौहार	त्योहार
11	अध्यन	अध्ययन
12	सम्मार्ग	सन्मार्ग
13	मनोस्थिति	मन: स्थिति
14	कारन	कारण
15	धंदा	धंधा
16	भन्डार	भंडार
17	तीर्व	तीव्र
18	महिलाऐं	महिलाएँ
19	बताइये	बताइए
20	गयी	गई
21	उतपात	उत्पात
22	दन्ड	दंड
23	ऊंट	ऊँट

24	पन्डित	पंडित
25	उपरोक्त	उपर्युक्त
26	जगतगुरु	जगद्गुरु
27	दुशील	दुश्शील
28	महात्म	माहात्मय
29	चरन	चरण
30	नास	नाश